ماہنامہ
شعاع عمل لکھنؤ
فروری ۲۰۱۵ء

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَ کِتَابٌ مُبِیْنٌ
بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

فاطمہ گشتہ صاحب دختر
بہتر از دُر و لؤلؤ و گوہر

یا زینب کبریٰ سلام اللہ علیہا


نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیۂ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I NO. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month.

Annual Rs. 200/-
Per copy-Rs. 20/-

SHUA-E-AMAL
Lucknow

शुआ-ए-अमल
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

FEBRUARY 2015


CHATR MANZIL AT BANK OF GOMTI RIVER
LUCKNOW



NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

फ़रवरी 2015 ई०

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

वर्ष 11 — अंक 8

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:
मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

सलाहकार समिति

- *प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी, अलीगढ़*
- *डॉ० महदी ख़्वाजा पीरी, ईरान*
- *सै० हसन अब्बास नक़वी, मुम्बई*
- *मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी, कराची*
- *कैप्टन सिकन्दर रिज़वी, लखनऊ*
- *प्रोफ़ेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद*
- *सै० अहमद अब्बास नक़वी, मुम्बई*
- *शायरे अहलेबैत रज़ा सिरसिवी, सिरसी*
- *सै० सैफ़ तक़ी नक़वी, दिल्ली*
- *मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ*

संरक्षक

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै. **कल्बे जवाद** नक़वी साहब

अध्यक्ष प्रचार प्रसार
माननीय **नवाब रज़ा** साहब, भोपाल

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप-सम्पादक
क़ायम महदी नक़वी 'तज़हीब' नगरौरी
आसिफ़ अब्बास नौगांवी, इमरान आग़ा, समद अब्बास

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी द्वारा स्वामी एस कलबे जवाद नक़वी के लिए निज़ामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोज़िट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।
सम्पादक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी

Per Copy 20/- **Annual 200/-**

lEiknu lfefr

- डॉ0 अमानत हुसैन नक़वी
- वासिफ़ अहमद नक़वी 'समीर'
- मौलाना महदी रज़ा, घोसी, मऊ
- मौलाना फ़ैज़ान जाफ़र अली
- शाहिद अली आज़मी
- नसीर हुसैन जलालपूरी
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- डॉ0 आरिफ़ अब्बास
- रेहान आलम, लखनऊ
- बिन्ते ज़हरा 'नदल हिन्दी'

- tQj+gbl fjteh C;jwpkQ+eEcbZ
- bjQku g6j] C;jwpkQ+e/; çnsk
- dQ+rdkud eh] C;jwpkQ+ngyh

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

●●●

WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

okf"kZ v'knku

1– एक साल के लिए 200/-

2– पांच साल के लिए 800/-

3– लाईफ़ मिम्बरशिप 4000/-

विषय सूची

Qjojh 2015bZ

रबीउस्सानी : 1436हि0

मासिक **^^'kqvk&,&vey**

(हिन्दी–उर्दू)

^[kkunkus bTrgkn uEcj nSud udhc y[kuÅ**

और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित

lHkh fdrkcksa को डाउनलोड करने के लिए

ykWx vku djsa gekjh osclkbV

Log on Our Website:

www.noorehidayatfoundation.org,
www.naqeeblucknow.com

वहाबी मत का सत्य

y§kd %& vk;rqYykfgy mtekl ,;ng myekekS ukuk lS vyhud h+ud eh
fdLr %5 lEiknu %ujsfgnk;r QkmUMs'ku

मुल्ला अलीकारी ने शरहे शिफ़ा के दूसरे भाग में लिखा है किः

“हम्बलियों में से इब्ने तैयमिया ने कमी घटती से काम लिया कि रसूल[स] की जियारत के लिए यात्रा को हराम ठहराया जिस तरह दूसरों ने अति से काम लिया कि उन्होंने कहा कि ज़ियारत का इबादत में दाख़िल होना धर्म की ज़रुरतों में है और इसके मना करने वाले पर कुफ़्र का हुक्म लगता है और यह दूसरा विचार सच से अधिक पास है इसलिए कि जिस चीज के मुस्तहब (धर्म में वान्छनीय) होने पर उलमा एक मत हो उसका हराम कहना कुफ़्र होगा इसलिए कि यह इससे ऊपर है कि किसी ऐसी चीज़ कि जो एक मत से मुबाह हो, उसे हराम कहा जाए जिसके कुफ़्र होने पर इत्तेफ़ाक़ (एका) है।”

‘कश्फ़ुज़्ज़ुनून’ में है कि उलमा ने इब्ने तैयमिया के बारे में बड़ी अति से काम लिया है कि यहाँ तक लिख दिया किः

“जो व्यक्ति इब्ने तैयमिया को शेखउलइसलाम (इस्लसम का उत्कृष्ट) कहे वह भी काफ़िर है।”

इन लिखी हुई बातों से मालूम हुआ कि बहुत से उलमा इब्ने तैमिया के कुफ़्र पर उसके इस कथन के कारण एकमत हैं।

शैख इब्ने हजर ने ‘दुर्रुकामिना’ में लिखा है किः

“लोग इब्ने तैयमिया के बारे में कई किस्म के हैं। कुछ तो उसे मुजस्सिमूइन (अल्लाह के लिए शरीर मानने वालों) में गिनते हैं क्योंकि ‘अकीदा हमविया’ और ‘वासितीया’ आदि में लिखा है कि हाथ और पैर और पिन्डली और मुख सब यतार्थ में अल्लाह के लिए हैं। और ‘वह स्वयं अर्श पर बैठा हुआ है कहा कि इस से स्थान विशेष में होना और उसका अंगों में बटा होना अनिवार्य (जरूरी) है; तो कहा हम यह नहीं मानते कि किसी स्थान विशेष में होना और अंग होना शरीर की निशानी है तो कहा गया कि बहरहाल यह व्यक्ति खुदा को “ला मकान” (स्थान और आयतन रहित) नहीं मानता और उसके लिए स्थान को अंश मानता है।

और कुछ लोग उसे इसलिए बेदीन (अधर्मी) मानते है कि उसका यह कहना है कि पैग़म्बर[स] से फ़रियाद (गुहार) नहीं की जा सकती। इसमें रसूल[स०] में दोष त्रुटि निकालना और आप के आदर सत्कार से रोकना है कुछ लोग इसे इसलिए मुनाफ़िक़ (ऊपर से कहने को मुसलमान मगर दिल से काफ़िर) कहते हैं क्योंकि इसने हज़रत अली[अ] के बारे के बारे में कहा कि उन्होंने जिधर का रुख़ किया उधर असफल और निकम्मे रहे, उन्होंने कई दफा ख़िलाफ़त पाने का प्रयास किया मगर नहीं पा सके और उन्होंने सारे युद्ध अपनी राजसत्ता के लिए लड़े न कि धर्म के लिए, वह सत्ता के लिए आकाक्षी थे। और उस्मान दुनिया के माल के बड़े प्रेमी थे। इसी प्रकार उसका यह भी कहना था कि अबुबक्र बूढ़े थे (न) समझते थे क्या कह रहे हैं अली[अ० स०] बचपन में ईमान लाए और बच्चे का इस्लाम कुबूल नहीं हो सकता। और जबकि पैग़म्बर की हदीस है कि ऐ अली तुम्हें कोई दुश्मन नहीं रखेगा मगर मुनफ़िक़। कुछ लोग यह कहते हैं कि यह आदमी उम्मत समुदाय/समाज का इमाम अगुवा/धर्म प्रमुख बनने का सपनाा देखता इसलिए वह वहाँ इब्ने तूमर की बहुत चर्चा और सराहना करता था। इन्हीं बातों के कारण वह लम्बी अवधि तक क़ैद

`में रखा गया। इस बारे में जब बाद में उसे समझाया जाता था तो कहता था कि मेरा मतलब यह नहीं था बल्कि दूसरा था और बहुत दूर का अर्थ बयान कर देता था।

इन तमाम उलमा के कथन से यह साबित हो गया कि रसूल[स०] की ज़ियारत को जाना सारे मुसलमानों के एके और एकमत से एक बेहतरीन अमल है और जो इसे नकारे उसने दीन की एक महत्वपूर्ण चीज़ का इन्कार किया।

roLl y dh ppkZ

तवस्सुल का अर्थ है रसूल[स०] के माध्यम से अल्लाह के यहाँ। इसके लिए कुरआन मजीद में भी सबूत हैं और बहुत सी हादीसें भी हैं और सहाबियों (रसूल[स०] के साथी) व ताबिईन (रसूल[स०] साथियों के साथी) के कार्य भी हैं और फिर तबे ताबिईन (ताबिईन के साथी) और (रसूल[स०] के साथियों के साथी) इस्लाम का समुदाय भी है जिनमें से हर एक बारी–बारी से लिखा गया है।

dqjku etha ls roLl y dk lcwr

रसूल[स०] से बात करते हुए कुरान मजीद में अल्लाह ने फरमाया है कि "क्यों नहीं ऐसा हुआ कि जब उन्होंने पापों के करने से अपने ऊपर अत्याचार /अन्याय किया था तो वह आपके पास आते और आकर अल्लाह से क्षमा मांगते और रसूल उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करते तो अल्लाह को क्षमा करने वाला दयावान पाते।" (आयत) प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि अगर पैग़म्बर[स] से तवस्सुल/माध्यम चाहना न होता तो फिर स्वयं उनका क्षमा मांगना ही पर्याप्त था। यह हुक्म न दिया जाता कि वह रसूल[स] के पास आऐं और आपके पास आकर क्षमा याचना करें और इसकी आवश्यकता न होती कि रसूल[स०] उनके लिए प्रार्थना करें। यह बात साफ है कि अल्लाह स्वयं "तव्वाबुररहीम" (तौबा/पाश्चाताप क़बूल करने वाला दयानिधान) है मगर यहाँ उसने स्वयं तव्वाबुररहीम होने को इस शर्त के साथ बान्ध दिया है। इससे बढ़ कर तवस्सुल के लिए और क्या सबूत हो सकता है?

gnhl kav k$ l gkfc;ksa dk pyu

1- tukcs vkne v dk roLl y

इसका वर्णन बहुत सी हदीसों में है। उनमें से एक वह है जिसे हाकिम ने 'मुसतदरक' में लिखा है और उसे सही ठहराया है कि जब हज़रत आदम[अ] से "तरके औला" (वह काम जिसका न करना अच्छा है।) हो गया तो उन्होंने कहा पालनहार! मैं तुझसे मुहम्मद मुस्तफा[स०] के हक़ का वास्ता देकर प्रार्थना करता हूँ कि तू मुझे क्षमा कर दे। अल्लाह ने कहा कि ऐ आदम! तुमने उन्हें किस प्रकार पहचाना? आदम[अ० स०] इस कारण कि जब तूने मुझे बनाया तो मैंने अर्श पर निगाह डाली तो उसमें लिखा हुआ देखा "ला इला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुललाह" उनका नाम मैंने तेरे नाम के साथ देखा तो समझा कि वह तुझे सबसे अधिक प्यारे हैं।

2. Lo;ajl wy vYykg dk roLl y

तबरानी की रवायत है 'मुअ़जमे कबीर' और 'मुअ़जमे औसत' में और इब्ने हय्यान 'मुअजमे और हाकिम ने सही होने की पुष्टि के साथ अनस बिन मालिक की ज़बानी लिखा है कि जब फ़ातिमा बिन्ते असद रज़ी अल्लाह तआला अनहा की वफात (देहान्त) हुई जिन्होंने हज़रत रसूल[स०] का पालन पोषण किया। तो हज़रत उनके सरहाने बैठे और कहा ''अल्लाह की कृपा हो आप पर हर समय ऐ मेरी माँ के बाद मेरी माँ''। इसके बाद जब क़ब्र बनाने का समय आया तो आपने अपने हाथ से उसे खोदा और उसकी मिट्टी अपने हाथ से निकाली और जब क़ब्र तैयार हो गई तो आप उसमें लेटे और कहा "अल्लाह जो जीवन देता है और मृत्यु देता है और स्वयं जीवित है इस तरह कि उसे मृत्यु नहीं आ सकती। पालनहार! मेरी माँ फ़ातिमा बिन्ते असद को क्षमा कर, और उनके स्थान को फैला दे बढ़ा दे। तुझे वास्ता है अपने पैग़म्बर[स] का और उन पैग़म्बरों का जो मुझसे पहले थे "तू बहुत करूणामय और दयावान है

और सबसे अधिक कृपा करने वाला है।" और इब्ने अबी शैबा ने ऐसी ही रिवायत जाबिर की ज़बानी लिखी है और इसी प्रकार इब्ने अब्दुल बर ने इब्ने अब्बास से और अबू नईम ने 'हिलयतुल औलिया' में अनस द्वारा। इन सब रिवायतों की चर्चा हाफ़िज़ जलालुद्दीन सुयूती ने "जामए कबीर" में की है।

यह तो खुली बात है कि हज़रत[स] को तवस्सुल की आवश्यकता नहीं थी मगर अपनी उम्मत को इस प्रकार से मांगने के लिए सिखाना था।

3- jlwy¹⁰ dsek/;e lstukc vcwrkfyc v⁰ dk o"kkZ dsfy, izkFkZuk djuk

रसूल के चचा हज़रत अबूतालिब ने हज़रत[स] को साथ ले जाकर वर्षा के लिए प्रार्थना की उसी समय वर्षा हो गई इस पर उन्होंने एक क़सीदा (प्रशंस्ति काव्य) कहा जिसके दो शेरों का आशय इस प्रकार हैंः

ßog xksjk fpVVk ftlds eq[kdss}kjk cknyl so"kkZfeyrh gSA og vukFkksadk vkJ; vkSj fo/kokvksadk j{kd gSA vkJ; ysusgS ml dh vksj cuh gkf'ke ¼gkf'ke ds½ dsnq[kh yksx rksog mldsikl midkjksaesaf?kjsjgrs gSaÞ

इन पंक्तियों को हज़रत[स] ने इतना अधिक पसन्द किया कि इन शेरों को और उनके रचयिता अबूतालिब[अ०] को याद किया जिसे हाफ़िज जलालुद्दीन सुयूती ने 'खसाइसे कुबरा' में लिखा है।

4- gtjr¹⁰ dk o"kkZdsfy,s izkFkZuk djus ij ,d dfo ds'kS

सुयूती ने स्वयं हज़रत[स] का वर्षा के लिए प्रार्थना करने के बाद वर्षा होने के बारे में लिखा है कि कनाना (क़बीले कुल) के कवि ने इस बारे में शेर पढ़े वह सुयूती ने लिखे हैं। इनमें से उस कवि ने जनाबे अबूतालिब के शेरों का भी हवाला दिया है और कहा है कि पैग़म्बर के मुख के द्वारा हमें वर्षा मिलती है और वह वैसे ही साबित हुए जैसा कि उनके चचा ने उनके बारे में कहा था। हज़रत[स०] ने उस कवि की प्रशंसा की और इस प्रकार उसके इन शब्दों का सत्यापन किया। कि पैग़म्बर[स०] के मुख के कारण हमें वर्षा मिली।

5- ,d vU/ksdksjlwy¹ dh f'k{kk

बुख़ारी ने अपनी तारीख (इतिहास) में और बैहिक़ी ने 'दलाइल' में सही बताते हुए और अबू नईम ने किताब 'अलमारिफ़त' में उस्मान बिन हुनैफ़ से रिवायत की है कि एक अन्धा हज़रत[स] के पास आकर कहने लगा कि

'अल्लाह से प्रार्थना कीजिए कि वह मुझे दृष्टि दे आप[स] ने कहाः चाहो तो धैर्य रखो और प्रार्थना न करो और चाहो तो प्रार्थना कर दूँ।

इब्ने माजा की रवायत में यूँ है कि चाहो तो अल्लाह से प्रार्थना करूँ और चाहो तो धैर्य रखो कि वह तुम्हारे लिए अच्छा है।

मगर उसने कहा आप मेरे लिए प्रार्थना कीजिए। हज़रत[स] ने कहाः अच्छा तो फिर ठीक से वजू करो फिर दो रकत नमाज़ पढ़ो और इसके बाद इन शब्दों से प्रार्थना करो कि "पालनहार! तुझसे मांगता हूँ और तेरी ओर ध्यान करता हूँ तेरे पैग़म्बर मुहम्मद[स] के द्वारा जो कृपा के पैग़म्बर हैं और ऐ मुहम्मद[स] मैंने आपके माध्यम से अल्लाह की ओर ध्यान किया कि वह मेरी इस इच्छा को पूरा करे। पालनहार! तू उनकी सिफ़ारिश को मेरे बारे में कबूल कर ले। जब उस व्यक्ति ने ऐसा किया तो उसको दृष्टि प्राप्त हुई।

6- lokn fcu dkfjc ds'kS

तबरानी ने मुअजमए कबीर में सवाद बिन कारिब की बीती लिखी है। उसमें है कि उन्होंने पैग़म्बर[स] के सामने अपना क़सीदा पढ़ा। उसमें था कि "पैग़म्बरों आप का माध्यम (निकट) अल्लाह के यहाँ सबसे अधिक निकट है और फिर यह कि आप[स] मेरी सिफ़ारिश कीजिए। इनमें से किसी बात को भी हज़रत ने आपत्ति नहीं की।

7- iSxEcj [kyhQk vcqØ dk rolLly

शरह (व्याख्या) दलाइलुलख़ैरात में हज़रत

अबूबक्र के बारे में लिखा है कि वह हज़रत[स] की पाक कब्र पर आए और कहाः "ऐ मुहम्मद मैं आपसे तवस्सुल करता हूँ (माध्यम चाहता हूँ)।"

8- mEeg ekSeuhu vkb'kk dk roLly

इमादुद्दीन आमरी की किताब "बहजतुल महाफिल" में है कि मदीना वासियों पर एक बार बहुत भयानक अकाल पड़ा तो उन्होंने जनाब आइशा से शिकायत की।

उन्होंने कहाः "हज़रत[स] की पवित्र क़ब्र की छत में एक मोखा कर दो कि उसके और आसमान के बीच कोई चीज़ आड़ न हो। लोगों ने ऐसा ही किया तो बहुत वर्षा हुई जानवर और पेड़ पौधे सब पर इससे बहुत अच्छा असर पड़ा।

9- f}rh; [kyhQk mej dk roLly

हाफ़िज़ अबू नईम इस्फहानी ने "दलाइलुनबूवत" में अनस की ज़बानी लिखा है कि हज़रत उमर वर्षा के लिए प्रार्थना करने के लिए निकले और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के द्वारा वर्षा के लिए प्रार्थना करते हुए कहाः

"पालनहार! पहले जब सूखा पड़ता था तो हम तेरे पैग़म्बर से तवस्सुल करते थे और अब हम अपने पैग़म्बर के चचा द्वारा तुझसे प्रार्थना करते हैं कि हम पर वर्षा कर।" इसके बाद वर्षा हुई। इसको जाहिज़ ने "अलबयान वत्तब्ईन" में दो जगह लिखने के बाद लिखा है कि

क़ाअब अल अहबार ने हज़रत उमर से कहा कि बनी इस्राइल पर जब सूखा पड़ता था तो वह पैग़म्बरों के पैत्रिक सम्बन्धियों द्वारा वर्षा के लिए प्रार्थना करते थे। उनके इस कहने पर हज़रत उमर ने जनाबे अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के द्वारा वर्षा की प्रार्थना की।



बजुज़ इसके नबी का नामे नामी ले के क्या कहिये
इधर कहिये मुहम्मद और उधर सल्ले अला कहिये
हमारा रहनुमा वह मुरसले महबूबे दावर है
जिसे हक़ तक रसाई का मुकम्मल वास्ता कहिये

जनाब सै0 रज़ा मुहम्मद नक़वी 'रज़ा' जाएसी

शरफ़ मेरा रहेगा कब तक

ख़तीबे अकबर लिसानुश शुअरा
मौलाना सै० औलाद हुसैन नक़वी
'शायर' इज्तेहादी

डेढ़ सौ साल से यकसाँ समर अफ़शां है यह बाग़
बज़्मो साक़ी तो बदलते रहे बदला न अयाग़।

न दबे अपने परायों से कभी अपने दमाग़
रौशनी लेते रहे मेरे चराग़ों से चराग़।

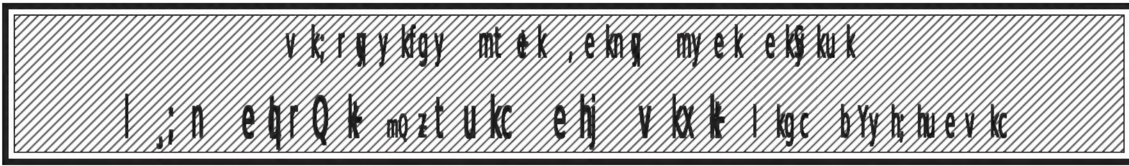
यह भी कह दूं कि शरफ़ मेरा रहेगा कब तक
आये आवाज़े "बिला फ़स्ल" अज़ाँ में जब तक।



gEn o uvr

'नदल' हिन्दी

हम्दे खुदा किया करो इसमें बड़ा सवाब है
नअते नबी पढ़ा करो इसमें बड़ा सवाब है
उलफ़ते आले फ़तेमा अज्रे रसूले पाक है
अज्रे नबी अदा करो इसमें बड़ा सवाब है
सबसे बड़े रसूल हैं सबसे बड़े इमाम हैं
इनकी बहुत सना करो इसमें बड़ा सवाब है
अपने ही वास्ते दुआ करने में क्या भलाई है
सबके लिए दुआ करो इसमें बड़ा सवाब है
सच्चे बनो यही तो है उल्फ़ते सादिको नबी
झूट से बस बचा करो इसमें बड़ा सवाब है
झूटों से मूँह को मोड़ लो सच्चों के साथ चल पडो
सच है किधर पता करो इसमें बड़ा सवाब है
मुल्ला है हक़ बयानी से आज 'नदा' जो मुनहरिफ़
उसके लिए दुआ करो इसमें बड़ा सवाब है



y§kd %eqLrQk gqlSu udoh *vlhQ* tk;lh

एमादुल उलमा सय्यद मुस्तफ़ा इब्ने उमदतुल उलमा सय्यद मोहम्मद हादी साहब मुजतहिद इब्ने आक़ा सय्यद महदी मुजतहिद इब्ने हज़रत गुफ़रानमआब माह रबीउल अव्वल 1252 हि0 मुताबिक 1837 ई0 में पैदा हुए। आपका जन्म स्थान लखनऊ और आप का तारीख़ी नाम 'मीर आग़ा' (1252 हि0) है। आपकी माँ उम्मतुज़ ज़हरा बेगम सुल्तानुल उलमा सय्यद मोहम्मद साहब रिज़वानमॉब की बेटी और गुफ़रानमआब की पोती थीं। इस तरह आपका सम्बन्ध हज़रत गुफ़रानमआब[र0 अ0] से पिता और माता दोनों ही ओर से था।

,eknqy myek ds firk %

जनाब एमादुल उलमा के पिता की आयु दो तीन साल थी जब उनके पिता सय्यद महदी साहब का स्वर्गवास हो गया। आपका लालन पालन जनाब गुफ़रानमआब ने किया। आपकी उम्र पांच साल ही थी कि हज़रत गुफ़रानमआब का भी देहान्त हो गया। अब सुल्तानुल उलमा ने अपने सगे भतीजे अर्थात उमदतुल उलमा की परवरिश और शिक्षा अपने ज़िम्मे ले ली। सुल्तानुल उलमा के संरक्षण में आपने मुजतहिद के स्तर तक की शिक्षा पूरी की। आप अत्यन्त चरित्रवान, ज्ञानी तथा तेजस्वी थे रिज़वानमआब उमदतुल उलमा से बहुत प्रेम करते थे। आपने अपनी छोटी बेटी सय्यदा उम्मतुज़ ज़हरा बेगम (जो पहली पत्नी से थीं और शरीफुलमुल्क मौलाना सय्यद मोहम्मद बाक़िर की सगी बहन थीं) का विवाह उमदतुल उलमा के साथ किया। बादशाहे अवध अमजद अली शाह के ज़माने में और वाजिद अली शाह के युग के आरम्भ में जबकि फैसले शरीयत के हुक्म के अनुसार होते थे उमदतुल उलमा सदरुस सुदूर के महत्वपुर्ण पद पर आसीन थे। बाहरी जगहों के समस्त मुफ़्ती उमदतुल उलमा के अधीन थे। सारे हुक्म अथवा निर्देश उमदतुल उलमा के शरीयत कदे से जारी होते थे। जनाब उमदतुल उलमा का 1278 हि0 में मात्र 48 वर्ष की आयु में देहान्त हो गया।

menrqy myek dh lUrkusa %

आपने अपने पीछे दो पुत्र तथा दो पुत्रियां छोड़ीं।

1. मौलाना सय्यद मोहम्मद महदी साहब मुजतहिद (जिनका देहान्त 28 वर्ष की आयु में निः सन्तान हुआ)।
2. आपकी बेटी जो बाक़िर हुसैन साहब की बीवी और मौलवी सय्यद असग़र हुसैन 'फ़ाख़िर' (जो नवाब ताजमहल साहिबा के दामाद थे) की माँ थीं।
3. आयतुल्लाह मौलाना सय्यद मुस्तफ़ा उर्फ मीर आग़ा साहब क़िबला मुजतहिद।
4. पुत्री जो मौलाना सय्यद कल्बे आबिद साहब जायसी की पत्नी तथा मौलाना सय्यद आक़ा हसन साहब क़िबला की माँ थीं।

,eknqy myek vkSj mudh lUrkus %

एमादुल उलमा सय्यद मुस्तफा उर्फ़ मीर आग़ा साहब हज़रत गुफ़रानमआब के परपोते और सुल्तानुल उलमा के नवासे थे। आपकी शादी मुम्ताजुल उलमा जनाब सय्यद मोहम्मद तक़ी साहब मरहूम की छोटी बेटी (पहली बीवी से जो कि सय्यदुल उलमा सय्यद मोहम्मद इब्राहीम साहब की सगी छोटी बहन थीं) के साथ हुई थीं जिनका देहान्त 5 मोहर्रम 1323 हि0 को हुआ। उन से दो सन्तानें हुई थीं परन्तु दोनों ही की कमसिनी में मौत हो गई थी फिर उन से कोई औलाद नहीं हुई। मीर आग़ा साहब ने दूसरी शादी बारहा के सादात में से अमीर हुसैन साहब (जो कि उमदतुल उलमा के प्रमुख शिष्य थे) की पुत्री से की जिनसे एक पुत्र मौलाना सय्यद ज़व्वार हुसैन और दो पुत्रियां उम्मतुज़ ज़हरा बेगम पत्नी कुदवतुल उलमा मौलाना सय्यद आक़ा

हसन साहब क़िब्ला मुजतहिद और उम्मतुज़्ज़ ज़किया बेगम मौलवी सय्यद फरज़न्द हुसैन 'ज़ाख़िर' की पत्नी और नवाब मौलवी सय्यद असग़र हुसैन 'फ़ाख़िर' की बहन थीं। आपकी इन पत्नी का देहान्त 1295 हि0 में हुआ।

एमादुल उलमा ने तीसरा विवाह 1295 हि0 में अपने वतन के सय्यद अली हादी साहब (जिनसे पहले से रिश्तेदारी थी) की बेटी के साथ किया। इन पत्नी से एक बेटे मौलाना सय्यद सिब्ते मोहम्मद हादी साहब और एक बेटी हुई। इन पत्नी की मृत्यु 1316 हि0 में हुई। उसके पश्चात मौलाना ने एक शादी और की लेकिन इन बीवी का एक साल के अन्दर ही देहान्त हो गया। इसके बाद मौलाना ने फिर विवाह किया जिससे एक पुत्री पैदा हुई। इसके बाद एक शादी और की और इन पत्नी से एक बेटे मौलाना सय्यद हुसैन हैदर हुए।

जब शरीयत मदार ने इस दुनिया से कूच किया तो आपने अपने पीछे दो पत्नियां, दो पुत्र, तीन पुत्रियां, एक बहु, एक पोती, दो नवासे तथा दो नवासियां छोड़ीं जिनकी देखभाल कुदवतुल उलमा मौलाना आक़ा हसन साहब के जिम्मे थी।

f'k{kk % एमादुल उलमा ने फ़न सिपहगरी (सैन्य विद्या) के साथ शिक्षा अपने खानदान के उलमा से प्राप्त की। प्रारम्भ में अपने पिता तथा अपने बड़े भाई से पढ़ा। फिर आगे की शिक्षा एंव दीक्षा अपने सगे मामू जनाब खुलासतुल उलमा मौलाना सय्यद मुरतज़ा इब्ने रिज़वानआब से प्राप्त की तथा फ़िक़्ह व उसूल की उच्च शिक्षा अपने ससुर मुम्ताजुल उलमा सय्यद मोहम्मद तक़ी साहब से ग्रहण की और मुजतहिद का पद प्राप्त किया।

1305 हि0 में फ़कीहे अहलेबैत ज़ियारात के लिए गये। इराक़ के उलमा एंव विद्वानों ने आपका आदर सत्कार किया बल्कि आक़ा अख़वन्द मुल्ला हुसैन अर्दकानी मुजतहिद कर्बलाए मुअल्ला और आक़ा सय्यद अली साहब आले बहरूल उलूम के द्वारा आपको इजाज़े भी प्राप्त हुए।

,eknqy myekdh Kkuhrk %

इल्लीयीनमआब अपने समय के प्रचण्ड विद्वान थे। फ़ख़रूल मुदर्रिसरीन मुम्ताज़ुल उलमा के बाद से हिन्दुस्तान में आपके समान कोई न था और उनके पश्चात आप ही मुफ़्ती–ए–आज़मे हिन्द थे।

सरकार शरीयतमदार के अनुयायियों का क्षेत्र बहुत विस्तृत था। लगभग चालीस वर्ष तक हिन्दुस्तान के शियों के मरज–ए–आज़म रहे। तज़किर–ए–बेबहा फ़ी तारीखुल उलमा के लेखक मौलाना सय्यद मोहम्मद हुसैन साहब नौगांवी लिखते हैं कि अपने समय में आलम व अफक़हे उलेमाए हिन्द (हिदुस्तान के सबसे बड़े आलिम और मुजतहिद) थे और चालीस साल इजतेहाद किया और इजतेहाद से सम्बन्धित सब काम अपने हाथों से करते थे। इस वजह से एक बार खानबहादुर सय्यद मुज़फ़फर अली साहब रईस जानसठ ने आपको लिखा कि आप बूढ़े हो गये हैं मैं चाहता हूँ कि एक मुहर्रिर आप की पेशी में रहे और उसकी तनख्वाह मैं दिया करूँ। आपने उत्तर लिखा कि आपकी इस सहनुभूति के लिए मै कृतज्ञ हूँ परन्तु मैं अपने सब काम अपने हाथ से करता हूँ।

इल्लीयीनमआब अत्यन्त तेजस्वी निष्ठावान, दयालु तथा पराक्रमी थे। शिष्यों को शिक्षा प्रदान करने के साथ भेंट के इच्छुक व्यक्तियों से मिलना, सैकड़ों पत्रों तथा मसलों के उत्तर लिखना और ज़रा भी थकान न महसूस करना शरीयत मदार का कमाल था। तज़किर–ए–बेबहा के लेखक का कथन है कि 'कुछ विश्वसनीय लोगों से सुना है कि किसी दिन आपकी डाक इक्के पर लद कर जाती थी और एक बार मैं ईद के अवसर पर आपके दर्शन को आया। मोमनीन और तालिब इल्म भी मौजूद थे आपने फरमाया कि मैं तीन रोज़ से लगातार मसायल पर ही हस्ताक्षर कर रहा हूँ और कोई काम नहीं किया मगर फिर भी खत्म नहीं हुए।

मौलाना सय्यद मुर्तज़ा हुसैन सदरूल अफ़ाजिल अपने तज़किरे 'मतलए अनवार' में लिखते हैं कि "मीर आग़ा साहब ने एक लाख से अधिक फ़तवे और सवालों के जवाब लिखे हैं"।

'तज़किर–ए–बेबहा' में एमादुल उलमा से सम्बन्धित वर्णन है कि "अख़बार शिया खजवा नवम्बर 1905

ई0 मे है कि ज़हीरूल उलमा मौलाना सय्यद ज़हीरूल हसन बारहवी मुजतहिद की ज़बानी कुछ मित्रों ने बयान किया कि कुछ फ़िकह सम्बन्धित समस्याएं इस परिवार मे ऐसी चली आ रही थी जिनका समाधान आप से पूर्व न निकल पाया था। लेकिन आपने ऐसा हल कर दिया कि हर बुद्धिमान व्यक्ति उसको स्वीकार कर ले। जनाब अबुल हसन अब्बू साहब (बाक़िरूल उलूम के पिता) फरमाते थे कि आप प्रथम श्रेणी के धर्म गुरूओं में माने जाते थे। अगर कोई मसला कहीं से अब्बू साहब के पास आता था तो वह अकसर मुझे देते थे। और आदेश देते थे कि जनाब आग़ा मीर साहब से दस्तख़त करवा लाओ। मैंने जनाब अब्बू साहब से जब पूछा कि लखनऊ के मुजतहिदों में से किसकी तक़लीद (अनुसरण) करूँ तो आपने एमादुल उलमा की तक़लीद का आदेश दिया। मैंने मिर्ज़ा अबुल क़ासिम साहब नजफ़ी से भी आपके ज्ञान की बड़ी प्रशंसा सुनी और मौलाना आबिद हुसैन साहब (ख्वाजा साहब) सहारनपुरी भी आप की विद्वता बुद्धि तथा ज्ञान की प्रशंसा करते थे आपको इल्मे फ़िक़्ह के साथ सर्फ़, नहव, भौतिक शास्त्र और अरबी साहित्य में दक्षता प्राप्त थी। प्रमाण में आपकी पुस्तकें मौजूद हैं''।

आप मस्जिदे आसिफी में इमामे जुमा थे। उलमा, विद्यार्थी, कवि और आम व खास लोग सभी आपके प्रशंसक थे।

मुन्शी मासूम अली उर्फ जलाल शाह ने मीर आग़ा साहब की शान में एक कसीदा लिखा जिसकी कुछ पक्तियां पाठकों के लिए प्रस्तुत की जाती हैं :

क़िब्लओ काबए दारैन फ़क़ीहे ज़ीशाँ
इफतख़ारे उलमा अफ़सरे अहले इरफाँ
सर पे सब शियों के दुनिया में उन्हें ऐ 'मासूम'
सदोसी साल सलामत रखे ख़ल्लाके जहां

दोनों लोकों के केन्द्र, उलमा के गौरव, ज्ञानियों के प्रमुख को शियों के सर पर खुदा 130 साल ज़िन्दा सलामत रखे।

ngkUr % सरकार शरीयत मदार का लगभग डेढ़ माह बीमार रहकर 11 रमज़ानुल मुबारक 1323 हि0 (मुताबिक 1906 ई0) बृहस्पतिवार दोपहर के समय स्वर्गवास हुआ। तजहीज़ो तकफ़ीन के बाद जब आपका ताबूत उठाया गया तो जनाज़े के आगे अलम था और लोग रो रहे थे और ''अल्लाहो अकबर'' के नारों और क़ुरआन की आयतों की तिलावत से पूरा क्षेत्र गूंज रहा था। ताबूत के साथ चलने वाले थोड़ी थोड़ी देर पर यह भी नारा बलन्द कर रहे थे ''यह जनाज़ा है नायबे इमाम का–यह जनाज़ा है हादिए अनाम का।''(यह उप इमाम और समुदायों के मार्ग दर्शक का शव है) अतएव शोकाकुल विशाल जनसमूह इस बात का प्रमाण था कि दुनिया से हिन्दुस्तान की शिया क़ौम का मार्गदर्शक और धर्मगुरू उठ गया है।

नमाज़े जनाज़ा इल्लीयीन मआब के भांजे तथा दामाद कुदवतुल उलमा के उत्तराधिकारी मौलाना सय्यद आक़ा साहब आसफ़ी मस्जिद के हसन इमाम जुमा ने पढ़ाई और फिर रोते बिलकते जन समूह के मध्य यह ज्ञान का सूरज गुफरामआब और सय्यद महदी इब्ने गुफ़रानमआब की कब्रों के बीच दफन किया गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

'चराग़े हिन्द गुल' से आपकी मृत्यु की तारीख निकलती है (1323 हि0)

y§ku ,oal Ei knu % फराएदे बहीया (अरबी) मसायल फिक़्हे इस्तेदलाली पर प्रकाशित 1305 हि0 (तार्किक धर्मशास्त्र)

2. हाशिया बर शरहे कबीर किताबुत्तहारत (अरबी अप्रकाशित)

3. यवाक़ीत फिल एहकामिल मुवाक़ीत (अरबी अप्रकाशित)

4. ख़ज़ीनतुल मसाएल पहला और दूसरा भाग इल्मे कलाम (धर्म विश्वास शास्त्र) (उर्दू प्रकाशित)

5. खज़ीनतुल मसाएल तीसरा और चौथा भाग दर उसूले फिक़्ह (अरबी अप्रकाशित)

6. हवाशी शरहे लुम्आ (अरबी अप्रकाशित)

7. हवाशी ज़ुबदतुल उसूल उसूले फिक़्ह (अरबी अप्रकाशित)

8. हवाशी मबादियुल उसूल उसूले फिक़्ह (धर्म संस्कार शास्त्र के सिद्धान्त) में (अरबी अप्रकाशित)

9. हवाशी नताएजुल अफ़कार उसूले फिक़्ह में (अरबी अप्रकाशित)

10.हवाशी तशरीहुल अफ़लाक इल्मे हैयत (खगोल शास्त्र)में

11. शरहे शाफ़िया इल्मे सर्फ़ अरबी व्याकरण में (अरबी)
12. हवाशी बरशरहे जामी, इल्मे नहो अरबी व्याकरण में (अरबी)
13. नख़बतुल अफ़कार (फ़ारसी दुआएं)
14. रिसाला हिदायतुल उलूम, फ़िक़्ह व अक़ाएद विश्वास व संस्कार पर (उर्दू प्रकाशित)
15. तोहफतुल मोमेंनीन, फ़िक़्ह पर
16. तोहफतुल आब्दीन, फ़िक़्ह पर
17. ज़ादुल मुसाफ़रीन
18. रिसालए तहारते निस्वाँ, फ़िक़्ह पर
19. तरजुमा अहकामुन निसा, फ़िक़ह में हाशियों (टिप्पणियों) के साथ
20. तशहीदुल इज़आन फ़ी अरकानिल ईमान, उसूले दीन विश्वास में (अरबी उर्दु तर्जुमे के साथ अप्रकाशित)
21. मोरबो ऐनिल हयात
22. रिसाला दर मसायब हज़रत सय्यदुश शुहदा (अरबी)
23. मोएज़–ए–फ़ाखरा (उर्दू)
24. अक़ायदे इमामिया इसना अशरिया (उर्दू प्रकाशित)
25. जद्वले अहकामे ज़रूरिया (उर्दू प्रकाशित)
26. तुहफ़तुस्सायलीन (प्रकाशित)
27. किफ़ायतुल सायलीन दर फिक़ह (उर्दू प्रकाशित)
28. दफ़ए शुबहात (उर्दू प्रकाशित)
29. अहकामे मुस्तफ़विया दर फिक़ह तर्जुमा मौलाना सय्यद मोहम्मद हारून जंगीपुरी (प्रकाशित)
30. जवाबाते मसायले मुश्किला
31. मिफ़ताहुल जन्नतः
32. नजातुद्दारैन
33. अज़ाल–ए–मफ़हमा दर अक़्दे कुलसूम (इतिहास पर प्रकाशित)
34. शरहे दुआए अदीला (प्रकाशित)
35. ज़ीनतुल एबाद
36. सवालो जवाब (फ़ारसी)
37. क़ौले फ़स्ल दर वक़्फ व वस्ल, इल्मे तजवीद (अरबी उच्चारण) पर (फारसी प्रकाशित)
38. फसअलू अहलुज़ ज़िक्र इन कुन्तुम ल ा तालमून (उर्दू प्रकाशित)
39. इरशादुल मुज़िकिकीन (उर्दू प्रकाशित)
40. मनाक़िब व फ़ज़ायल (उर्दू प्रकाशित)
41. मजमूअए मसायल (उर्दू प्रकाशित)
42. जवाबे मसायल (उर्दू प्रकाशित)
43. मसायले हुसैनिया (उर्दू प्रकाशित)

ukrsjl ywsvdje l0

मोहतरमा तन्ज़ीम ज़हरा 'कनीज़' अकबरपूरी

कौन ला सकता है अहमद की क़यादत का जवाब
दो जहाँ मे है कहाँ उनकी रिसालत का जवाब

दुश्मनों के साथ भी हर वक़्त है हुस्ने सूलूक़
है यक़ीनन ग़ैर मुमकिन इस शराफ़त का जवाब

क़ौले ज़र्री पर फ़िदा होने लगे हैं जानो दिल
कौन देगा इस फ़साहत इस बलाग़त का जवाब

आसमॉ तक सर निगूँ है देख कर रिफ़अत तेरी
खल्क़ में मुमकिन नहीं तेरी जलालत का जवाब

संग दिल क्या पत्थरों ने पढ़ लिया कलमा तेरा
बस में दुनिया के नहीं तेरी हुकूमत का जवाब

सारी दुनिया की निगाहें आप पर मरकूज़ हैं
क्या कभी मुमकिन नहीं है एसी सूरत का जवाब

दे गये हैं दौलते कुरआनो इतरत मुस्तफ़ा
दोनों आलम में नहीं है ऐसी दौलत का जवाब

ऐ 'कनीज़े' सादिक़े आले नबी यसरिब को चल
खुल्द में रहना भी कब है इस सुकूनत का जवाब



mEeh iSEcj

ekSykuk lS;n egEen 'kkfdj udoh lkgc fdCyk vejksgoh

bLyke dk lcls cMk nkok ;g gS fd dqjvku lokyksa esa nqfu;k dh vkfkjh vkSj vafre fdrkc gS] ;g gksu ghyks gokns dsyxrs gSa pqukaps gtjr iSEcj ¼l0½ ds ^mEeh* gksus dk izek.k Hkh bUgha fo"k;ksa esa gSA

dqjvku ds [kqRke gksus ds ckn ^mEeh* dk vFkZ fujk ^vui<+* gSA

dqjvku ds ls;kd esa dkguk ;g gS fd vki ^eDds* ds jgus okys Fks tks ^mEe&my&dqjk* Hkh dgk tkrk gSA bl fy, vki dks ;g ^mEeh* gksx;kA

ftu yksxksa dk [k;ky ;g gS fd ^mEeh* ds ekuh ^vui<+* ds gksrs gSa mudsbfLrnyky dk lkjek;k vkSj mudh rdZ dh iwjh ;g vk;rsa gSa&

1&^^vkSj muesa dqN ,sls vui<+ gSa fd og [kqnk dh fdrkc dks vius eryc dh ckrksa ds flok dqN ugha le>rsA og Qdr [k;kyh ckrsa fd;k djrs gSaA**

nwljk lwjk vy&cØjk vk;r 78

yfdu budsbl fopkj dk [k.Mu bl h vk;r ds ckn okyh vk;r ls gks tkrk gS ftl esa bj'kkn gqvk gS%&

^^[kjkc gSmu yksxksa ij tks vius gkFkksa lsxzUFk fy[krs gSa fQj ¼yksxksa ls½ dgrs ¼fQjrs½ gSa fd ;g bZoj ds ;gka ls vk;k gSA rkfd ml ds eksy;e ls FkksMh lh dher ¼ykHk½ dek;sa [kjkc gSmu ij fd mudsgkFkksa usfy[kk vkSj fQj [kjkc gSmu ij fd og ,slh dekbZ djrs gSaA**

2&^^¼HkkV Qjokuk½ bl otg ls gSfd mudk rks ;g dguk gSfd ¼vjc dsª½tkfgyksa¼dk gd+ ekjyus½ esa ge ij dksbZ ¼nks"k½ jkLrk.k dh ½ijkg ghugha**

lwjk&3] vkys bejku%vk;r& 76

3&^^¼gsi S Ecj !½vki ^fdrkc okyksa vkSj tkfgyksa ls iwNs;s fd D;k rqe Hkh bLyke yk;s gks**

vkys bejku] vk;r&20

4&^^ogh rksgSftl us tkfgyksa esa mUgha esa dk ,d iSEcj Hkstk**

4- lwjk] vy&tqeqvk vk;r&2

vr%;g yksx dgrs gSa fd reke eQfLljksa vFkkZ~l Hkh dqjku ds Hkk"; dkjksa us 'kCn ^^mEeh** dk eryc vui<+ fy;k gSA

^^ll ¼yksxksa½ [kqnk vkSj ml ds jlwy mEeh iSEcj ij bZeku ykvks tks [kqn Hkh ¼[kqnk vkSj ml dh ckrksa ij½ bZeku j[krk gSA**

bl vk;r esa uch mEeh ds Vqd.Ms dks **^^ogh rks gS ftl us mEeh yksxksa esa mUgha esa dk ,d iSEcj Hkstk**** tksM+s gq, ^^mEeh** dk vFkZ ^vui<+* Bgjk;s gSa vkSj fQj vuqoknesa cM+h Qjk[k fnyh ;kuh fo'kky ân;rk dk lqcwr nsrs gq;s ^mEeh* dk rtZqek ^vui<+* fy[k nsrs gSa vkSj vkiuh rkbZn vkSj vuqeksnu ds fy, &

29 oas lwjs vy vu dcwr dh 48 oha vk;r]

^^vkSj ¼gs iSEcj ! ½dqjku ls igys u rks vki dksbZxzUFk i<+ sgh Fks vkSj u vius gkFk ls fy[kk gh djrsFksA** vkSj bl h ds lkFk gnhl ksa dk i wjk Hk.Mkj isk dj nsrs gSa ftl esa mudk nkok gS fd dethjs ls dethjs jok;r ¼vugkj½ ugha gS ftl esa gtjr iSEcj ds i<+us fy[kus dk lk{; eksStwn gksA

nwljk i{k mu yksxksa dk gS tks ^mEeh* dk vFkZ ^mEe&my&dqjk okys* ls fudkyrs gSa vkSj ^mEeh* ds ekuh ^eDds okyk* crkrs gSA bl rjg ;g yksx gtjr iSEcj ds cs i<+s fy[ks gksus ls lsoZFkk bUdkj djrs gSaA

;g fookn dqN ,slk /;ku nsus dk fcyk u gks ekxj dfBukbZ ;g gS fd dqN xqV bl fookn esa uh;r ugha fn[kkbZ iM+rhA bl fy, FkksM+k foLrkj iwoZd fopkj vko';d gksx;k gS rkfd ^mEeh* dk vFkZ izdk'k esa vk lds vkSj ;g irk py tk;s fd fy[kk i<+k gksuk vyokp'kd vokehl rg tu Lrj ij vui<+ gksuk

vkSj tkfgy gksrk ge ekuh ;kuh ijLrh i;kZ le>s tkrs gSaA bl fy, bl lsHkh uktk;t+ ¼voS/k½ Qk;nk mBkus dh lEHkkouk, av f/kd gSaA D;ksafd fQj njfe;kuh okLrk s cht dh dfM+;ksa ls xqt+jus ds ckn ^mEehn* ds ekuh dks ^ftgkyr* ^vKku* ds ekuh es a ys ds gS tks+r dh voekuuk HkhlEHko gSA

ysfdu bl izdkj eas lcls igyh ckr ;g vPNh rjg le> ysus dh gS fd ^tkfgy* ;kuh ^vKkuh* gksrk bYe vkSj Kku ls 'kwU; gksus ds ekuks ga S vkSj ^Kku* ek= fy[kus i<+us dh {kerk ij fuHkZj ugha gS oju fQj og lHkh yksx vkfye ;k fo}ku dgs tkus ds gd+nkj gSa tks i<+uk fygkuk d {kkv ksa ls gh i<+ ksZ;k x ns gSaA bu esa ls cgqr ls yksa dh fy[kkoV cgqr vPNh gksrh gSA vkSj lk/kkj.k bckjr Hkh cM+h jokuh ls i<+ ys gSa ijUrq ;g n'ks tkrs gSa fd dbZ i<+ k fy[kk uk lh [k ys s ls ds kbZ mu dks fo}kuksa dh lwph esa lfEefyr ugha djrkA ft l dk lh/kk vkSj lkQ+ eryc ;g gqvk fd ^i<+k fy[kk* vkSj fo}ku nksuks , d nwljs ls vfuok;Z: i ls lEc) ugha gSA iz;ksd fy[kus i<+us dks fo}ku ugha dgk tk ldrkA tc ;g ckr eku yh xbZ rks fcYdqy bl h rjg ur hts ;g fudyk fd iz;ksd csi<+k fy[kk tkfgy ;k vKkuh ugha dgk tk ldrkA gekjs lkeus fdrus gh , sls mnkgj.k gSa fd el k;y&, &bYeh vFkkZr ~'kkL=h; iz'u] dj.kksa ij i;kZIr v f/kdkj j[krs gq,s Hkh dqN yksx csi<+s fy[ks gSaA bl fl yfl ys esa rks 'kk;jksa ¼dfo;ksa½ dh cgqr cM+h rknkn fudyxhA lqkx;k gS fd ut Q+ ¼bZjkd½ ds f'k;k {ks= esa , sls Hkh f'k{kkFkhZ Fks tks fo"k; ij v f/kdkj j[krs Fks ijUrq csi<+s fy[ks FksA ckn esa dqN yksx i<+us dh {kerk iSnk dj ys s Fks tks ^^d jhy kdkfrc** vFkkZr~ i<+ dus okyk ex j u fy[k l dus okys dgs tkrs FksA gekjs vius ns'k esa dfo oj dky hnkl bl dk lcls cM+k mnkgj.k gSA

bl fy, dks bZ dg ldrk gS fd iz;ksd csi<+k fy[kk tkfgy ¼vKkuh½ gksrk gSA vr%;g ckr tsgu u'khu ¼ân; ea½ dj ysuh pkfg, fd fdlh ds csi<+s fy[ks gksus ls ml dh ftgkyr vkSj vKkurk dnkfi fl) ugha gks thA

vkb;s vc bl fo"k; ds nwljs i{k dk tk;tk

ysa vkSj og ;g gS fd ^mEeh* vkSj ^mEehbZ* ds ekuh D;k gSa\ bl fl yfl ys esa yqX+kr ds gokys ;kuh 'kCn dks'kksa ds lUnHkZ u dk dksbZ+ vkSj vi;kZIr gksaxsD;ksafd 'kCn dks'kdkj rks vusd fopkj/kkjkvksa ds yksxksa us jps gSa ;kuh bLyke fojks/kh rRoksa vFkkZr~ bLyke nq'eu vukfljus Hkh eqrRrc fd;s gSaA vkSj vkt lcls ft+;knk ekU;rk un vkSj ekud ekuk tkus okyk yqX+kr ¼'kCn dks'k½ Hkh bLyke nq'eu ejdt+ bLyke fojks/kh dsUnz ls lEcfU/kr gSa gk¡! ckr rQlhj ;kuh dqjkZu ds Hkk"; ijj tkds :d rh gSA ft Ugksaus cM+h Qjk[k fnyh ¼fo'kky ân;rk½ dk ifjp; fn;k gS vkSj c;kM+ ¼mEehbZ½ ds ekuh tkfgy ks ds Bgjk fy;s gSaA ge eQ+lfljksa dh bl x+yrh dks dqN vkuset ftl dh bl hvk;r ls fl) dj ldrs gSa ft l esa mUgksa us ^mEehbZ* ds ekuh ^tkfgy* ks ds fy;s gSaA

ogh lwjk vy cØjk dh 78oha vk;r&

^^vkSj mu es a dqN , sls vui<+ gSa fd og [kqnk dh fdrkc dks vius eryc dh ckrksa ds flok dqN ugha le>rs A og QØ+r [k;kyh ckrsa fd;k djrs gSaA

;gkj ^vui<+* vuqokn djus bl fy, x+yr gSfd mu ds ;gk mEeh yksxksa dh ppkZ gh ugha gSA ;gk ij gQ+Zs ^bYyk* dk iz;ksx gqvk gSA ft lds }kjk vioku fd;k tk rk gS ;kuh ;g yksx cl eryc dh ckr i<+rs gSa vkSj ;g ckr Hkh /;ku ns;s;ksX; gS fd cjkcj okyh vk;r tks fy[kus ds ckjs es a gS ml esa dgk tk jgk gS fd] **^^mu yksxksa ij [kq gS tks fdrkc vius gkFkksa ls fy[k ys s gSa**** bl vk;r esa 'kCn ^o;s ij* ^Q*+ v {kj dk gksuk bl ckr dk iz;ksx gS fd nksuksa vk;rsa , d nwljs ls tqM+h gqbZ gSaA bl fy, vxj ;gk ^mEeh* dk vFkZ ^vui<+* ;k ^tkfgy* fy;k tk, x k rks rjUrq ijLij fojks/k dk lkeuk gksxk fd og vui<+ ¼tkfgy½ Hkh gSa vkSj fdrkc esa vius eryc dh ckr Hkh i<+ ys s gSa vkSj vius gkFk ls fy[k Hkh ys s gSaA vkSj ;g gkL;kLin ifjfLFkfr gksxhA vr% ;g fl) gS fd ;gk ^mEeh* vui<+ vkSj tkfgy ds vFkZ esa bLrseky ugha fd;k x;k gSA

vc ge dqN ksa ds ey ^mEe &my &dqjk* ds iz'u ls bl 'kCn dk iz;ksx n'kkuk jg tkrk gSA pqukaps bu

vk;rksa esa ;g ekuh ysus ls dksbZ ijLij fojks/k Hkh ugha gksrk vkSj eryc Hkh Bhd cSBrk gSA

;kuh rhljs lwjs dh cht oky vk;r esa Fkkg y xkus okyksa us eq'kfjdyk vYykg ekuk gS ;kuh bYe ¼Kku½ tgy ¼vKku½ ,d nwljs ds eq'kfcy gSa vkSj blfy, ^mEehbZ* dk rtZek ^tkfgy* dj fn;k gSA ;| fi okLro esa ^vgys&fdrkc* dk vFkZ ; gfn;kg bZ kbZ ksa ls gS bu ds eq'kfcy vjc gSA blfy, mudks ^mEehu dgk* dh fjok;r ls ^mEeh* dgk x;k gSA

vc jg xbZ vui<+ okyh ckr] rks bl fo"k; esa fuosnu ;g gS fd bl ckr ls bUdkj lEHko ugha fd gqtwj iSxEcj ¼l0½ ds fy[kus i<+us dks dqjvku esa udkjk x;k gSA ysfdu eq'ksvpjt gS rtZek djus okyksa vkSj rQlhj djus okyksa ij ;kuh vuqokndksa oa HkK"; dkjksa ij fd mUgksaus bl udkjus dks ifj'kq vkSj LFkkbZ udkjuk dgs seku fy;k vkSj bl vk;r dk eryc ;g dg s fudkyk fd gqtwj iSxEcj ¼l0½ vui<+ Fks vkSj /;ku nsa vkSj QSyk djsa bj'kkn gksrk jg gS fd &

^^¼gs iSxEcj !½ dqjvku ls igys u vki dksbZ fdrkc gh i<+rs Fks vkSj u viuss gkFk ls fy[krs Fks** **lwjk 29 vy&vudcwr vk;r&48A**

bl vk;r esa rks cl dqjvku ds vorj.k ls igys vki ds ckjs esa i<+us fy[kus vkSj u i<+us dh ppkZ gS bl [kq'kh dh fo'ks"krk crkbZ x;h gS ;kuh igys vki bl [kq'kh ds LokeS gh Fks]&dqjvku mrjus ds ckn vki n{kdj i<+rs Hkh Fks vkSj ml dks viuss gkFk ls fy[krs Hkh FksA vkSj bl ls igys tks ekuus ds ckjs esa tks dkSu udkjk x;k gS og ,d lhfer dky] egnwn tekus ds ckjs esa gSA ;g vki dh eu dh ;kuh vki dh 'kku de djuk ugha gS cfYd ,d rjg dh eu dh vkSj iz'kalk gSA

bl ds ckn ;g ckr Li"V gks ds fy, fd mEeh ds vFkZ dks ^vKku* ls dksbZ lEcU/k ugha gS dqjvku et hn dh cgqr lh vk;rsa esa lkcw r gSA

^^iSxEcj dks cM+h dkSer okys us Kku fn;k gSA lwjk&53 vUuTe vk;r&4**

dgha Q+ek;k x;k gS fd &

^^vkSj tks ckrsa vki ugha tkurs Fks] vki dks fl[kk nhA lwjk4] vfUulk vk;r&113**

bl ds ckn gnhl gSa ftu esa cl se'kgwj vkSj fo[;kr gnhl] ^^eSa bYe dk 'kgj vkSj vyh mldk njokt+k gSa** vc Kku foKku dk lalkj vki ds Kku vkSj fo}rk dks ftl Lrj dk Hkh ekus gt+jr iSxEcj ¼l0½ dk LFkku gt+kj xqk mlls Åpk gh jgsxkA D;ksafd tks vuqHko uxj vkSj }kj esa gks x;k gS og hh vki nksuksa esa gSA bl dh nyhy vkSj izek.k gt+jr vyh ¼v0½ dh og gnhl gS ftl esa vki us Q+ek;k gS fd] **^^iSxEcj ¼l0½ us eq>s gt+kj v/;k; fl[kk;s**

vc vko ;s bl fo"k; dks n{k rs fd vki fy[kuk tkurs Fks fd ugha rks vki dsi= fy[kus dh ckr vxj fl) u Hkh ekuh tk;s rks dke ls de ;g ckr rks loZekU; gS lc dks rlyhe gS fd] & ^gqnSfc;k* ds l{gukes ;kuh lfU/k i= esa jlw&my&ykg ¼[kqnk ds iSxEcj½ ds 'kCnksa ij vki fNr dh xbZ rks vki us gt+jr vyh ¼v0½ dks ;g 'kCn dkV nsus dk gqDe fn;kA gt+jr us bl lR; dks udkjus ls viuh vleFkZrk izdV dh rks vkiUrrks Pok gqtwj ¼l0½ us [kqn viuss gkFk ls ;g 'kCn dkV fn;s FksA ;g ckr rks rHkh lEHko gS tc fd lh dks i<+uk fy[kuk vkrk gksA

cgjgky tks yksx gqtwj ¼l0½ dks vo ekuuk dh jkg ls ^mEeh* ;k vui<+ dgus pkgrs gSa mu dh lsok esa cl bruk gh fuosnu djuk gS fd vxj ge gqtwj ¼l0½ dks dsoy Hkk"kk d nf"V dks ls n{kus rks Hkh nqfu;k ds ikl xqkxku dh dksbZ gn ckd+h ugha jg tkrhA D;ksafd ftl bUlku h tkfcr&,&ft+Unxh ;kuh ekuoh; thou lajrk dks ldy lalkj ds cM+ tho h gt+jkr cjl dh fujUrj dks'k'kksa ds ckn lkekftd :i esa izLrqr u dj lds A bUlkuh cgcwnh ekuo dY;k.k ds bl tkes rjhu dkuwu lokZ ;kfof/k dks ,d rFkkdfFkr csfy[kh i<+h gLrh us egt +pUn fnu dh ft+Unxh esa i'sk dj fn;kA u tkus fdrus ^okn* lkeus vk;s vkSj viuh vlQyrk dk ejfl;k i<+ jgs gSaA

cgjgky bl l{kfIr ys[k esa gq+ lj et+eul s ;g ckr rks lkeus vk gh xbZ fd ^mEeh* ds ekuh ^tkfgy* vkSj ^vui<+* gj fxt+ ugha fy;s tk ldrsA



eq[; lekpkj

xg ea=h Jh jkt ukFk flag us dk;nsfeYyr ekSykuk dYcs tOokn lse qykdkr dh

13 tuojh dks'kke **5** ctsxg ea=h Jh jkt ukFk flag usdk;nsfeYyr ekSykuk dYcs tOokn udohlsmudsvkokl ij igqWp dj eqykdkr dhA

xg ea=husdgk fd tSls gh eq>sv ki dh chekjh dh lpwuk feyh eSaQkSu v ki lsfeyusdsfy, vk;k gWwA dk;nsfeYyr fiNysd bZfnuksa lschekj gSaA

ckr phr dsnjfe;ku ekSykuk dYcs tOokn lkgc usxg ea=hlsdgk fd gekjhNksVslsleqk; ij lekt okn h lkjdkj bruhT;+knfr;k¡ dj jgh gS] eqYke flag ;kno thvki dsnksLr gS]mulsbl fo"k; ij okrkZ dhft, fd vkf[kj eqv fLlc ea=h tksf'k;k lqUuh vkSj fgUnw eqfLye QlknmR;slr g]Saml dsb'kkjsij f'k;k leqk; ij bruhft+knr; kWD; ksad h tk jgh gSA

ekSykuk usckr phr dsnjfe;ku xg ea=h ls f'kdk;r djrsgq, dgk fd vki uspqkko dsvolj ij tksokns gekjslemqk; dsv f/kdkj dscksjseafd;sFks mudksv c rd i wjk ughafd;k x;kbl ij xg ea=h Jh jkt ukFk flag useksSykuk dks;dhu fnyk;k gSfd v fr 'kh?kz bl fo"k; ij dk;Zokgh dh tk;sxhA

ekSykuk usokrkZdscho dgk fd d'ehj eagekjh rhu i hf<+;k¡ lsv f/kd vkcknh gSexj Hkkjrh; turk ikVhZusv c rd ml ij dksbZ/;ku ughafn;kA

xg ea=h usekSykuk dks;dhu fnyk;k fd og mudsl kFk gSav kSj mudh reke leL;kvksadksgy djus dk i wjk i z;kl djasxsA mUgksaus ekSykuk lsvkSj Hkh ckrsa djusdsfy, mUgsafnYyh vkusdsfy;sv keaf=r fd;kA rkfd vkSj Hkh leL;kvksadsl ek/kku ij okrkZ dh tk ldsA

oDQ+ cksMZ dsp;sjeSu dsf[kykQ+ i z'kkZ dj iqykQ pwk

7 tuojh **2015** dksf'k;k lsUVªy oDQ+ cksMZ dsp;sjeSu olhe fjtoh dk njxkg gt jr vCckl v0 ea tYl sd scknik iqykQ Wkx;kA bl dsv ykok y[kuÅ dsfofHkUu eksgYyksaeaHkh olhe fjtohds[kykQ+ i z'kkZ gq,A ogha dcZyk rkyd Vksjk eal S;n QS+t+dks eqoYyhdsin lsgVk;stkusdksysdj djcykdsfuokfl;ksausxsV ij rkykcUnhdj olhe fjtohds f[kykQ+ ukjscktk+h djrsgq, mudk iqykQ Wk;gk¡ds fuokfl;ksausdjcykxsV ij rkykyxkdj /kjuk'kq dj fn;kA fuokfl;ksadkdguk gSfd oDQ+ cksMZds p;sjeSu viusfutth Qk;nsdsfy, lS QS+t+dks eqoYyhdsin lsgVkjgsgSa

bl dcZkeaclk;sgq, ykxksadkdgukgSfd ge ykxksadsikl jgusdsfy;stxg ughaFkh rks eqoYyhlS QS+t+usdjcykdsukt k;t+dCt ksadks gVokdj ge ykxksadks;gk¡clk;kgSvkSj lj Nqkus dhtxg nhgSvkSu;sjkSf'ksadhrkehj djkbZgS] ;gk¡ dhohjku iM+hefLtnksadksvkckn djk;kgS ;gk¡ij vkSj Hkhu;sjkSf'kad kdke gksjgkgSeq[rlju ;sfd djcykdksiq jkSd+djusealekSmwk eqoYyhlS QS+t+dk v ge jksy gS fdl hHkhigysdseqoYyhus ;gk¡ bruskdke ughafd;kA

djcykrkyd Vksjk seav kSjr agkFkksaeafeVVh+dk rsy ysdj [kM+hFkhafd vxj nwljk eqoYyhv krk gS rksdbZ Hkhdj ysaxhA iz'kZu djusokyksausf'k;koDQ+ cksMZdsp;sjeSu olhe fjtohdheq[kkfyQr eatem dj ukjsckth+dhA nwljhrjQ+f'k;koDQ+cksMZ dstjh;s dk;nsfeYyr ekSykuk lS dYcs tOokn dksHkhd bZtxgksa dseqoYyhdsin lsgVk;stkusdksHkhysdj f'k;k leqk; eaxql k gSA

dk;nsfeYyr dk dguk gSfd ;sl c lekt okn h ikVhZdsd, d usrk dsb'kkjsij oDQ+ cksMZbl dk;Zokgh dksv Utke nsjgk gSmudh ekWx gSfd eq[; ea=h vf[kys'k ;kno th bl eqkeysdks[kqn ns[ksavkSj eqkeysdhtkp djkdj fu"i{k dk;Zokghdj sA

Hkkjr esa Hkh ikfdLrku tSls gkykr iSnk fd;s tk jgs gSa% dk;nsfeYyr ekSykuk d¥cs tokn

19 fnlEcj dks etfyls mysek&,&fgUn ds tujy flsdsVjh bekes tqek dk;nsfeYyr ekSykuk dYcs tokn ud+ohlkgc us uekts tqek ds [kqcsa esa lEckS/kr djrs gq,s ijns dh vgfe;r ij tksj fn;k vkSj ijns ds f[kykQ+ vkus okys fofHkUu xyr c;kuksa dk [kuMu fd;k uekft+;ksa dks f[krkc djrs gq, dgk fd ,d ,sfl;klh yhMj ftUgsa eqlyekuksa dk [kSj [okg ¼pgrs½ vkSj lcls cM+k gennZ le>k tkrk gS mlus yxkrkj ijns ds fojks/k esa c;ku fn;s gSa mlus dgk fd ^^vxj esjk cl pys rks gj ijns djus okys ds tsy esa Mky nw¡ vkSj blh rjg dsfofHkUu c;kukr bLyke nq'euh yksxksa dh rjQ+ ls vkrs jgrs gSa mlh fl;klh yhMj dk dguk Fkk fd bLyke us vkSjr dks cjkcjh dk gd+ ugha fn;k bl ckr dk [kuMu djrs gq;s dk;nsfeYyr us dgk fd vxj dqN vkus djhe dk eqrkyk fd;k tk;s rks ekywe gksxk fd bLyke us vkSjr dks cjkcj dk gd+ fn;k gS ftruh bTtr o vt+er vkSjr dh bLyke us c;ku fd;k gS og nwljs /keksaZ esa ugha gSA ekSykuk us dgk vkt ;g ZgSmu eqlyekuksa ij tks mu dh ikVhZ esa ekStwn gSa vkSj bLyke eq[kkfyQ+ c;kukr ij [kkeks'k gSa!

dk;nsfeYyr us dgk fd mu dk;sc;ku lj[kkj bLyke ds vgdke dh eq[kkfyQ+r esa gSa vkSj eqlyeku mUgsa vc Hkh [kSj [okg le>rs gSa oD+Q+ tk;nknksa dh rckgh ij ukjkt+xh dk btgkj djrs gq, eksykuk us dgk fd dkSu oD+Q+ [kksjksa ds f[kykQ+ ,d gks vkSj vxj dksbZ ,d gks djs lkeus vk;s rks ,sls yksxksa ds gkFk eas [kqn iLr gks tk,saxsD;ksafd mu dh fQ+jr cUnjksa ds tSlh gksrh gSA vxj ge gkFk esa gkFk j[k dj cSBs jgsrks og [kqn Mj dj Hkkx [kM+s gksaxsA gqdwer dh <hy dk urhtk ;s gqvk gS fd fQ+j oD+Q+ cksMZ esa cnZ+kuksa dk d¶+tk gks x;kA

ekSykuk us dgk fd bu'kkvYykg iSxEcj dk ftYn gh dkuqu.kh djk.k'k ?kksf"kr fd;k tk,xk ftl dk ijwk dke ,d gQ+rs esa eqdEey dj fy;k tk,xkA igys ;sls iSx~kEcj fl QZy [kqÅ rd gh esa gnw Fkh exj vc vkyh bf.M;k iSekus ij QSyk;k fd;k tk jgk gS ftlesa ijs'ksfg;Unqrku ds lj xekZu kSoku 'kkfey gksa tks rkyhe esa lekth lj xfeZ;ksa ds lkFk oD+Q+ tk;nknksa dh lqj{kk ds fy;s Hkh dke djsaA ekSykuk us dgk fd bLyke dks cnuke djus ds fy;s fo'o Lrj ij lkft'k dh tk jgh gS mldh otg

;sgS fd ;wjks esa bLyke rsth ls QSy jgk gS ftlds ckjs esa dqN yksxksa dh ;g jk; gS fd dqN nsj ckn ;gk¡ bLyke ds vykok dksbZ vkSj etgc ugha cpsxkA ;g [kcj fd ;wjksi esa bLyke rsth ls QSy jgk gS mlds nq'euksa dks ijs'kku dj jgh gSA D;ksafd og vius dks bLyke ds fl;klh xycs ls ugha cpk ik jgs gSa]A

;sgSfd ;wjks esa bLyke t+ay dh vkx dh rjg QSy jgk gS bl fy;s nq'eu;k bLyke dh c<+rh gqbZ edcwfy;r dks jksdus ds fy;s bLyke nq'eu yksxksa ds pgjs ij bLyke dh eq[kkfyQ+ kyxkdj eqlyekuksa ds cnu NkM+ jgh gSaA rkfd bLyke dks cnuke fd;k tk lds vkSj lPps eqlyekuksa ds fnyksa esa bLyke ls uQ+jr iSnk gks tk;sA

dk;nsfeYyr us dgk fd vkt fo'o Lrj ij tks vkradokn gks jgk gS pkgs og i'kkoj esa gks;k bZjkd+ vkSj lhfj;k tSls ns'kksa esa mu lc dk edln fl QZ ;sgS fd bl rjg vkradokn dks tkjh j[k dj bLyke vkSj eqlyeku nksuksa ls yksxksa ds fnyksa esa uQ+jr vkSj [kkSQ+ iSnk fd;k tk ldsA

ekSykuk us dgk fd ikfdLrku esa vkradokn dh 'kq:vkr etfyls ij gey ls gqbZ Fkh] f'k;ksa dh gR;k dh tkrh Fkh mls le; f'k;k /keZxq:vksa us iz'kkl fd;k vkSj ljdkj ls dgk fd vxj bu vkradokfn;ksa dks u jksdk x;k rks Hkfo"; esa ;s rkdrsa ljdkj ds fy, gh [krjk cu tk;saxsA exj og ljdkj us /;ku ugha fn;k D;ksafd ml le; ogk¡ f'k;ksa ds ekjs tkus ls mu dks chtsu'kkfd Z djkph esa cjkcj fo;ksa dks ,d cM+k tYlk gksrk jgk Fkk rks mu vkradokfn;ksa us mls tyls ij Hkh gey sfd;sA ftlesa njtuksa /keZxq: Hkh ekjs x;s vkSj vkt ;g gkyr gS fd ;s vkradoknh turk dks gh ugha cfYd lsuk dks Hkh fu'kkuk cuk jgs gSa vkSj ekl we cPpksa dh Hkh gR;k,sa dj jgs gSaA ;gh gkyr /khjs/khjs Hkkjr esa Hkh iSnk dh tk jgh gS;gk¡ Hkh etfyls ij geys vkradokn dh 'kq:vkr gks pqdh gS vxj blh le; ljdkj us dksbZ BksI dk;Zokgh ugha dh rks Hkkjr dk gky Hkh ikfdLrku tSlk gks ldrk gS vkSj bl dh iwjh ftEesnkjh ljdkj ij gksxhA dk;nsfeYyr us dgk fd ljdkj okbZ dh ykykp esa dj jkg/kekHkkjr fr;ksa dh tku dks nkao ij u yxk;sA

y[kuÅ esa ot+hj xat esa etfyl ij geyk gqvk vkSj njxkg gt+jr vCckl v0 #Lre uxj esa nkoZk ds [kkSQ+ gks jgs iz'kklu dkfj;ksa ij vkradokfn;ksa us iFkjko fd;k] xksy;k¡ pyk;ha mu ds f[kykQ+ ukeTn fjiksVZ Hkh dh x;h Fkh exj okbZ dh ykykp vkSj dqN yhMjksa ds ncko esa mu ij dk;Zokgh ugha dh x;h vxj ;gh gky jgk rks og fnu nwj ugha tc ;gk¡ Hkh vkradoknh tu dk vtkc cu tk;saxsA